ISSN-2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS

Original Research Article

अनुवाद की समस्याएँ

* डॉ. अजित विठ्ठल लिपारे,

* सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, सदगुरू गाडगे महाराज कॉलेज, कराड.

सारांश :

भाषा न केवल मनुष्य की भावाभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है., अपितु समाज, संस्कृति, इतिहास और अनुभवों का संग्रह भी है। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूचि के अनुसार बाईस अधिकारिक भाषाओं को मान्यता मिल चूकी है, जिसमें आज विपुल मात्रा में साहित्य सृजन हो रहा है। भाषाओं के विकास के कतिपय काराणों में से एक कारण है-अनुवाद। अनुवाद न केवल शब्दों का परिवर्तन है बल्कि मनुष्य की सभ्यता जितना ही पुराना एक सृजनात्म सेतु है, जो दो भाषाओं एवं संस्कृतियों को जोडने का प्रयास करता है। अत: उसे 'संस्कृति संवाद' भी कहा जाता है। यह एक बौद्धिक, रचनात्मक एवं संवेदनशील प्रक्रिया है। इसमें न केवल एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में रूपांतरित किया जाता है, अपितु उस भाषा की सांस्कृतिक और भावात्मक गहराई को पूरी सही अर्थवत्ता के साथ स्थानांतरित करना पडता है। एक सफल अनुवादक को यह कार्य करते वक्त अनेकानेक समस्याओं से रू-ब-रू होना पड़ता है, जिसमें प्रमुख कारण है भाषाओं की भिन्न प्रकृति। विभिन्न भाषा-भाषि मानव समूहों में सांस्कृतिक एवं अभिव्यक्तिगत कारणों से भिन्नताएँ हो जाती है, जिसकारण अनुवादक को शब्दानुवाद, अर्थानुवाद, सामाजिक-सांस्कृतिक तत्वानुवाद, पारिवारिक रिश्तों का अनुवाद, मुहावरों-लोकोक्तियों आदि का अनुवाद करते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

बीज शब्द- *अनुवाद, समस्या, परिवर्तन, भाषा, समाज, संस्कृति, अनुवादक, अभिव्यक्ति, शैली, अर्थ, मुहावरा*

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

लोकोक्ति, स्त्रोत एवं लक्ष्य भाषा।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज से परे वह अपना जीवन-यापन नहीं कर सकता। अन्य प्राणियों की तुलना में उसे एक श्रेष्ठ वरदान प्राप्त हो चूका है-भाषा। केवल मनुष्य ही अपने विचार एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति हेतु भाषा का प्रयोग कर सकता है। भाषा ही एक ऐसा सेतु है, जिसके माध्यम से वह अपने विचार एवं भावनाएँ अभिव्यक्त कर सकता है एवं दूसरों के विचार एवं भावनाओं को सुन एवं समझ सकता है।भारत एक बहुभाषी देश है। आज पूरे भारत में बाईस भाषाओं का प्रचलन देखा जाता है। इसमें हर एक भाषा साहित्यिक दृष्टिकोण से संपन्न एवं समृद्ध है। किसी भी भाषा के विकास के लिए उसमें विपुल मात्रा में साहित्य सृजन होना आवश्यक है, उसीप्रकार उस भाषा के साहित्य का अन्य भाषाओं में अनुवाद होना भी जरूरी है। अनुवाद एक ऐसा सशक्त माध्यम

ISSN–2278-5655
AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal
Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025
OPEN ACCESS Original Research Article

है जिससे कोई भी भाषा व्यष्ठि से समष्ठि की ओर अग्रेसित होती है। अनुवाद में न केवल शब्दों का परिवर्तन होता है अपितु दो भाषाओं की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक धाराओं का सुंदर मिलाप भी होता है।

अनुवाद शब्द का गठन 'वद' धातु में 'अनु' उपसर्ग जोडने से हुआ है। इसमें 'वद' का शाब्दिक अर्थ है 'कथन' और 'अनु' का 'पीछे, पुन:, समान अथवा अनुरूप'। अर्थात अनुाद शब्द का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है-'किसी के कहने के बाद कहना'। अनुवाद शब्द को परिभाषित करते हुए डॉ. अर्जुन चव्हाण लिखते है, "एक भाषा में कही गयी बात को किसी दूसरी भाषा में समान रूप से या उसके अनुरूप फिर से कहना अनुवाद है।"[1] अनुवाद यह एक ऐसी प्रकिया है जिसके लिए अंग्रेजी में 'ट्रान्सलेशन' (Translation) शब्द प्रयक्त किया जाता है, जो लैटिन भाषा के 'ट्रान्स'(Trans) तथा 'लेशन'(Lation) के संयोग से बना है, जिसका अर्थ है 'पार ले जाना'। मराठी में अनुवाद के लिए 'भाषांतर', फ्रेंच में ' ट्रडुक्शन', अरबी में 'तर्जुमा' शब्द प्रयुक्त किए जाते हैं। राजपाल हिंदी शब्दकोश के अनुसार अनुवाद शब्द का अर्थ है, "भाषांतर, रूपांतर, समर्थन, दुहराना।"[2] अनुवाद यह एक ऐसी रचनात्मक, बौद्धिक एवं संवदेनशील प्रक्रिया है, जिसमें किसी स्त्रोत भाषा का लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय केवल उस भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में रूपांतरित ही नहीं किया जाता बल्कि उस भाषा की सांस्कृतिक एवं भावात्मक गहराई को उसकी पूरी अर्थवत्ता के साथ स्थानांतरित किया जाता है। यह कार्य सीधा-सरल नहीं होता। अनुवाद का यह कार्य मूल लेखन से कठिनतर होता है ऐसा कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। किसी भी रचना का मूल लेखक अपनी इच्छा एवं रूचि के अनुसर शब्द, भाव एवं वाक्यों में बदलाव कर सकता है। उसमें काट-छाँट करके उसे मनचाहा रूप दे सकता है जबकि अनुवादक को मूल आशय में बंधे रहना पड़ता है। व्यक्त आशय को अपने शब्दों में ढ़ालना पड़ता है। कभी-कभी तो यह मूल लेखन से भी कठिन जान पड़ता है। अत: किसी शिशु को जन्म देने की अपेक्षा उसका पालन-पोषन करना जितना दुष्कर कार्य है। एक सफल अनुवादक को अनुवाद करते समय कतिपय कठिनाइयों एवं समस्याओं से गुजरते हुए यह दुष्कर कार्य करना पड़ता है। समान्यत: अनुवाद करते समय निम्नांकित समस्याएँ सामने आती है।

शब्दानुवाद की समस्याएँ :

शब्द भाषा की मौलिक एवं सार्थक इकाई है। वाक्यों की संचना करते वक्त इसका उपयोग किया जाता है। तथा विचारात्मक सूचनाओं के आदान-प्रदान हेतु शब्द सहायक बन जाते हैं। सामान्यत: जहाँ एक या एक से अधिक ध्वनियाँ मिलकर एक विशिष्ठ अर्थ को प्रकट करती है तब उसे 'शब्द' कहते है। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो एकाधिक वर्णों के मेल से बनी स्वतंत्र सार्थक इकाई 'शब्द' कहलाती है। अनुवाद की प्रक्रिया में शब्द और उससे अभिप्रेत होनेवाले अर्थ को अनन्य साधारण मेहत्व है। शब्दानुवाद करते समय शब्द का अभिधेयार्थ लेने से अनेक समस्याएँ व्युत्पन्न होती है क्योंकि प्रत्येक शब्द के लिए अन्य भाषा में समान शब्द मिलेंगे यह धारणा निर्मूल है। अकसर यह समस्या विज्ञान, तकनीकी, विधि , गणित आदि विषयों का अनुवाद करते वक्त सामने आती है। दूसरी ओर प्रत्येक भाषा की भाषिक संरचना अलग होने से भी अनुवाद में कठिनाइयाँ आ जाती है। जैसे 'I am reading a book' का 'मैं हूँ पढ रहा एक पुस्तक'। ऐसा अंग्रेजी का हिंदी में शब्दों

ISSN-2278-5655
AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal
Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025
OPEN ACCESS Original Research Article

के क्रमानुसार अनुवाद किया है जो उचित नहीं है। यहाँ लक्ष्य भाषा की प्रकृति की उपेक्षा की गई है।

अर्थानुवाद की समस्याएँ :

अनुवाद में मुख्यत: अर्थ का संप्रेषण होता है। अत: अर्थ को मूल रूप से अनुवाद की नींव कहा जाता है। अनुवादकों को अर्थ का अन्तरण करते समय शब्दानुवाद करना पड़ता है। स्रोत भाषा में निहित अर्थ का लक्ष्य भाषा में रूपांतरण करना दुष्कर कार्य है। इस संदर्भ में डॉ. जी. गोपीनाथन लिखते है, "प्राय: स्रोत भाषा की अभिव्यक्ति से जो अर्थ निकलता है, वह लक्ष्य भाषा की अभिव्यक्ति से व्यक्त होनेवाले अर्थ की तुलना में या तो विस्तृत होता है, या संकुचित या कुछ भिन्न होता है, या फिर इनमें से दो या अधिक का मिश्रण।"[3] अनेकार्थक शब्दों का लक्ष्य भाषा में परिवर्तन करते वक्त उस रचना के सृजनकर्ता को क्या अभिप्रेत है इसका ध्यान रखना पड़ता है। स्रोत भाषा की अर्थवत्ता को खोए बगैर यह कार्य करना पड़ता है। व्यंग्यार्थ के अनुवाद की समस्या अर्थानुवाद की मुख्य समस्या है। अनुवाद करते समय अभिधेयार्थ के साथ-साथ लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ को भी लक्ष्य पाठ में संप्रेषित करना आवश्यक हो जाता है। विशेषकर कविताओं में अभिधेयार्थ के बजाय रस, भव अर्थात व्यंग्यार्थ अधिक महत्वपूर्ण होता है।

सामाजिक-सांस्कृतिक समस्याएँ :

विश्व में अनेकानेक भाषाओं का प्रचलन देखा जाता है और हर एक भाषा अपने सामाजिक-सांस्कृतिक तत्त्वों से लेस है। मानव जिस प्रकार से किसी-न-किसी सभ्यता एवं संस्कृति को लेकर आगे चलता है उसके समान भाषा भी किसी-न-किसी सभ्यता एवं संस्कृति के परिवेश में प्रवाहमान होती है। प्रत्येक भाषा का एक विशिष्ट सांस्कृतिक परिवेश होता है जिसके निर्माण में उस भाषा को बोलने वालों की सामाजिक, एतिहासिक, भौगोलिक परिस्थितियाँ महत्वपूर्ण होती है। संसार की प्रत्येक भाषा में ऐसे सामाजिक-सांस्कृतिक शब्द होते है जिनके पीछे एक सुदीर्घ एतिहासिक परंपरा होती है। आधुनिक युग के प्रसिद्ध नृतत्वविज्ञानी मैलिनोव्स्की ने इस समस्या पर गंभीरता से विचार-विमर्श किया है। उन्होंने ट्रोबियान द्विप के आदिवासियों में प्रचलित भाषा के विशिष्ट शब्दों का अनुवाद करते समय 'साहचर्य का संदर्भ' इस अपने अर्थ-परक सिद्धांत को रूप दिया है। मैलिनोव्स्की ऐसा मानते है कि शब्दों का अनुवाद करते समय उसमें निहित सांस्कृतिक संदर्भ महत्वपूर्ण होते हैं जो उस भाषा को बोलनेवालों के रीति-रिवाज एवं आचार-विचार पर आधारित होते है। सारगर्भित रूप से कहा जाय तो मैलिनोव्स्की के नुसार अनुवाद मतलब दो भाषाओं की सांस्कृतिक संदर्भों का ऐक्य या समतुल्यता है। किसी भी मूल रचना का सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश उस रचना के लेखक की स्वानुभूति को अनुवाद में एक अनुवादक तथा उसकी अनुभूति एवं अनुदित रचना के सांस्कृतिक परिवेश के माध्यम से प्रस्तुत करता है। अब मूल एवं अनुदित रचना का मिलान किया जाए तब रचना के सारे अंग जैसे की वैसे उसमें आने आवश्यक है, किन्तु किसी जनता के रीति-रिवाज, उत्सव-पर्व-त्यौहार अन्य सांस्कृतिक संदर्भों से संबंधित वाक्य, शब्द, संवाद, मुहावरे आदि के अनुवाद में कठिनाइयाँ उपस्थित हो जाती है।

पारिवारिक रिश्ते-नाते संबंधित शब्दावली की समस्याएँ :

रिश्ते-नाते की शब्दावली का अनुवाद करते समय अनुवादक को कतिपय कठिनाइयों से गुजरना पड़ता है क्योंकि इसके पीछे सामाजिक-सांस्कृति व्यवस्था होती है। हिंदी में 'दादा',

ISSN-2278-5655
AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal
Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025
OPEN ACCESS Original Research Article

'बाबा' जैसे संबोधनपर शब्द मलयालम में नहीं होते। हर एक समाज में रिश्तों की अपनी-अपनी अहमियत होती है। इस संदर्भ में डॉ.जी.गोपीनाथन लिखते है, "हिंदी समाज में चाचा को जितना आदर और प्यार होता है उतना शायद मामा को नहीं। इसलिए नेहरू मामा नहीं कहा जाता, नेहरू चाचा ही कहा जाता है। लेकिन मलयालम में इसका अनुवाद करते समय नेहरू मामन या नेहरू अम्मावन करना पड़ेगा क्योंकि केरलीय मामा को अधकि आदर देते है।"[4]

मुहावरों और लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्याएँ :

भाषा-शैली में गतिशिलता एवं रोचकता व्युत्पन्न करने हेतु मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग किया जाता है। साथ ही सशक्त अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में इन दोनों को (मुहावरा, लोकोक्ति) अपनाया जाता है। मुहावरे एवं लोकोक्तियों के संदर्भ में डॉ. सौ. शकुंतला पांचाल लिखती है, "महावरे कम-मे-कम शब्दों में अधिक अर्थ की प्रतीत कराता है।.....लोकोक्ति की विशेषता यह होती है कि यह बोल-चाल की भाषा में प्रयुक्त होती है, फिर रूढ़ हो जाती है और अपनी लोकप्रियता के कारण साहित्यिक भाषा में स्थान प्राप्त कर लती है।"[5]

समस्त भाषाओं की तुलना करने पर अनेक भाषाओं मे परस्पर मिलते-जुलते मुहावरे और लोकोक्तियाँ मिलती है, परंतु इसके साथ-साथ उस भाषाओं को बोलने वालों की सांस्कृतिक परंपराओं के कारण विशिष्ठ मुहावरें एवं लोकोक्तियों का प्रचलन भी देखा जाता है। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में यही स्थिति पायी जाती है। ऐसे वक्त अनुवाद का काम कठिन हो जाता है। जहाँ लक्ष्य भाषा में स्त्रोत भाषा में प्रयुक्त लोकोक्ति एवं मुहावरा मिलता है वहाँ अनुवादक उसे सीधे रूप से अपना लेता है। कभी-कभी उसे शब्दानुवाद का भी आधार लेना पड़ता है किन्तु ऐसा करते वक्त उसे अर्थतत्त्व का ध्यान रखना पड़ता है। तो कभी-कभी शब्दानुवाद से अर्थ संप्रेषण में कठिनाई आने पर अनुवादक भावानुवाद की प्रवृत्ति को अपनाता है।

शैलीपरक समस्याएँ :

विद्वानों ने अनुवाद के क्षेत्र में जितना महत्व अर्थ को दिया है उतना ही शैली को भी दिया है। अनुवादक को मूल लेखक की शैली के हर एक पहलू को सूक्ष्मता से समझना आवश्यक है। तभी वह 'शैलीगत समतुल्यता' प्रस्थापित कर सकता है किन्तु ऐसा करते वक्त उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अत: इससे स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा में खाई व्युत्पन्न हो जाने का डर भी रहता है। अधिकतर विद्वान यह मानते हैं कि शैली तत्व का संबंध केवल कविता एवं सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद करने में महत्वपूर्ण होता है, किन्तु वास्तविक दृष्टि से देखा जाय तो वैज्ञानिक साहित्य, व्यावसायिक पत्र और कानूनी अभिलेखों में भी वह उतना ही आवश्यक है। दो भाषाओं के बीच जो शैलीगत अंतर दिखाई देता है वह एक जटिल प्रक्रिया है। अनुवादकों को इन सबका सामना करना पड़ता है।

अन्य समस्याएँ :

अनुवाद के क्षेत्र में उपर्युक्त समस्याओं के अतिरिक्त कुछ और समस्याओं का भी समाना अनुवादक को करना पड़ता है। जो निम्नवत है-

अनुवादक को सबसे पहले सुयोग रचना का चुनाव करने की समस्या का सामना करना पड़ता है। उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध आदि विधाओं में कौन सी विधा अपनी सृजन

ISSN-2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

क्षमता के अनुरूप है इसको तय करना नितांत आवश्यक है। इसमें अगर कुछ गलती हुई तो अनुवाद रूपी समस्या का पर्वत सामने खड़ा रहेगा। अत: यहाँ पर आवश्यक है कि अनुवादकों को अपनी-अपनी रूची, शब्द संपदा एवं भाषा पर अधिकार का विचार करके साहित्यिक विधा का चयन करना चाहिए।

मूल रचना के वातावरण को यथार्थ रूप से अनुदित कृति में चितारना भी अनुवादक के सामने बडी चुनौती है। केवल भाषा के रूपांतरन से, पर्यायवाची शब्दों के प्रस्तुतीकरण करने मात्र से या आशय का वर्णन करने से अनुवाद का कार्य पूरा नहीं होता। बल्कि मूल की सब बातें जैसी की वैसी आनी चाहिए, न ही उसमें में कुछ छूटने पायें अथवा बिगड़ने पाये। कभी-कभी पर्व, उत्सव आदि स्थलों में केवल अभिधेयार्थ या अभिधा शक्ति से काम नहीं चलता वहाँ लक्ष्यार्थ या लाक्षणिक शब्दावली का सहारा लेना ही अनुवादक को उपादेय होगा।

अनुवादक को मूल भाषा एवं अनुदित भाषा दोनों का समृद्ध ज्ञान होना, उसमें निष्णात होना, दोनों पर समान अधिकार होना एवं दोनों में अभिव्यक्ति की सक्षमता का होना आवश्यक है। सामान्यत: ऐसा माना जाता है कि अनुवाद भाषा अनुवादक की मातृभाषा होती है जिसमें वह सोचने-विचार करने की क्रिया करता है। ऐसे अनुवाद में स्वयमेव ममता एवं निजत्व निखर उठता है। कभी-कभी प्रतिभासंपन्न अनुवादकों का दो या दो से अधिक भाषाओं में प्रभुत्व होता है। ऐस अनुवादकों की अनुवाद की भाषा उनकी मातृभाषा से भिन्न होने के कारण वे उसे अध्ययन से अर्जित करते हैं। ऐसे अनुवाद भाषा में शरीर तो होता है लेकिन आत्मा खो जाती है।

शाब्दिक प्रभुत्व एवं पर्यायवाची शब्दों का समृद्ध सागर अनुवादक के लिए केवल आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य भी है। कहावतों-मुहावरों का अनुवाद करने में समानार्थी, तत्सम, प्रभावशाली, लाक्षणिक शब्दों की आवश्यकता होती है। जैसे मराठी कहावत 'खायला कार अन भूईला भार' को हिंदी में 'काम का न काज का, दुश्मन अनाज का' कहाना तर्कसंगत होगा।

सार रूप से कहा जाय तो किसी भी भाषा की साहित्यिक समृद्धि से परिचित होने में अनुवाद की उपादेयता नि:संदिग्ध है। अनुवाद ही वह सशक्त माध्यम है जिसकी सहायता से किसी भी राष्ट्र की साहित्यिक, सांस्कृतिक विचारधारा को समझा जा सकता है। अत: अनुवाद यह एक ऐसा सेतु है जो अनेकता में एकता स्थापित करने का महत्वपूर्ण कार्य करता है। अनुवाद का यह कार्य जितना सीधा-सरल लगता है उतना ही जटिल एवं विभिन्न प्रकार की समस्याओं से घिरा हुआ भी है। एक प्रतिभा संपन्न अनुवादक इन समस्याओं के सागर को पार करते हुए यह पुनित कार्य तन और मन से करता है।

संदर्भ सूची :

1. *चव्हाण (डॉ.) अर्जुन- अनुवाद चिंतन, अमन प्रकाशन, 104अ/ 118, रामबाग, कानपुर-208012, प्र. सं. 1998, पृ.सं. 38*
2. *संपा. बाहरी (डॉ.) हरदेव- राजपाल हिंदी शब्दकोश, पृ.सं. 32*
3. *गोपीनाथन (डॉ.) जी.-अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग, लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजील, दरबारी बिल्डींग, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद 211001, ष. सं. 2008, पृ.सं.56*

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

4. *गोपीनाथन (डॉ.) जी.-अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग, लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजील, दरबारी बिल्डींग, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद 211001, ष.सं. 2008, पृ.सं.69*

5. *पांचाल (डॉ.) सौ. शकुंतला- हिंदी अनुवाद एवं भाषिक संरचना, अभय प्रकाशन, 128/224, एच ब्लॉक, किदवाई नगर, कानपुर 208011, प्र. सं. 2005, पृ.सं.46*

Cite This Article:

डॉ. लिपारे अ. वि. (2025). *अनुवाद की समस्याएँ* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 124–129). ***Doi:*** ***https://doi.org/10.5281/zenodo.18007361***